ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–94
दिनांक– शुक्रवार, 19 दिसम्बर, 2025

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 22.5 एवं 9.8 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 98.0 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 80.0 प्रतिशत, हवा की औसत गति 5.4 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 1.2 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 1.1 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 16.2 एवं दोपहर में 20.5 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(20–24 दिसम्बर, 2025)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 20–24 दिसम्बर, 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल रह सकते हैं। इस दौरान मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। सुबह में हल्के से मध्यम कुहासा छा सकता है। वायुमंडल के ऊपरी हिस्से से ठंडी हवा का प्रवेश तथा पछिया हवा के कारण कोल्ड डे की स्थिति बन गयी है तथा देर सुबह तक घना कुहासा छा रहा है। अगले 1–2 दिनों तक ऐसी स्थिति बने रहने की सम्भावना है हालांकि 20 दिसंबर के बाद स्थिति में सुधर हो सकती है।
- अधिकतम तापमान 18 से 22 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 12 से 13 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 3–5 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चल सकती है तथा 22 दिसंबर के आसपास पुरवा हवा भी चल सकती है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 35 से 45 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- काम तापमान एवं कोल्ड डे की स्थिति को देखते हुए खेतों में उचित नमी बनाये रखे। नमी की कमी होने पर सिचाई करें।
- गेहूँ की फसल में खर–पतवार नियंत्रण की सर्वाधिक उपयुक्त अवस्था बुआई के 30 से 35 दिन बाद मानी जाती है। गेहूँ में उगने वाले चौड़ी पत्ती एवं संकरी पत्ती वाले सभी प्रकार के खर–पतवारों के प्रभावी नियंत्रण हेतु पहली सिंचाई के बाद सल्फोसल्फ्यूरॉन 33 ग्राम प्रति हेक्टेयर तथा मेटसल्फ्यूरॉन 20 ग्राम प्रति हेक्टेयर की मात्रा को 500 लीटर पानी में घोलकर खड़ी फसल में छिड़काव करें। छिड़काव करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखें कि खेत में पर्याप्त नमी उपलब्ध हो, जिससे दवा का प्रभाव बेहतर हो सके।
- गेहूँ की पिछात किस्मों की बुआई 25 दिसंबर से पहले अवश्य पूरी कर लें, क्योंकि इसके बाद बुआई करने पर उपज में कमी आ सकती है। इस क्षेत्र के लिए अनुशंसित पिछात किस्मों में एच.डी. 2733, एच.यू.डब्लू. 468, डब्लू.आर. 544, डी.बी.डब्लू. 39, एच.डी. 2967 तथा एच.डब्लू. 2045 प्रमुख हैं। बुआई से पूर्व प्रति किलोग्राम बीज को 2.5 ग्राम बेविस्टीन से उपचारित करें तथा इसके बाद क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. दवा की 8 मिली मात्रा प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार अवश्य करें।
- बुआई से पूर्व खेत की तैयारी के समय अंतिम जुताई में 40 किलोग्राम नत्रजन, 40 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 20 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। जिन क्षेत्रों में फसलों में जिंक की कमी के लक्षण दिखाई देते हों, वहाँ किसान अंतिम जुताई के समय जिंक सल्फेट 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में मिलाएँ। छिटकवाँ विधि से बुआई करने पर प्रति हेक्टेयर 150 किलोग्राम तथा सीड ड्रिल द्वारा पंक्तियों में बुआई करने पर 125 किलोग्राम बीज का प्रयोग करें। बुआई से पहले खेत में हल्की सिंचाई अवश्य करें, जिससे बीजों का समुचित जमाव सुनिश्चित हो सके।
- अगात बोई गई रबी मक्का की 50 से 55 दिन की फसल में 50 किलोग्राम नत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें तथा इसके साथ मिट्टी चढ़ाने का कार्य भी करें।
- गत माह रोपित आलू की फसल में आवश्यकतानुसार निकौनी कर मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें तथा मौसम को ध्यान में रखते हुए सिंचाई करें।
- टमाटर की फसल में फल छेदक कीट की नियमित निगरानी करें। इस कीट के पिल्लू कच्चे एवं पके दोनों प्रकार के फलों में छेद कर उनके अंदर घुस जाते हैं और गूदे को खाते हैं, जिससे फल सड़ने लगते हैं और उत्पादन में भारी कमी आती है। इस कीट की रोकथाम के लिए प्रति हेक्टेयर 8 से 10 फेरोमोन ट्रैप खेत में लगाएँ। जैविक नियंत्रण हेतु ब्यूवेरिया बेसियाना 1 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। यदि कीट का प्रकोप अधिक हो तो स्पिनोसेड 48 ई.सी. 1 मिली प्रति 4 लीटर पानी अथवा इंडोक्साकार्ब 14.5 एस.सी. 1 मिली प्रति 2.5 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।
- चना की फसल में चना सुंडी की नियमित निगरानी करें, क्योंकि यह कीट फसल को अत्यधिक नुकसान पहुँचाता है। प्रारंभिक अवस्था में यह पत्तियों एवं कोमल टहनियों को नुकसान पहुँचाती है तथा फलियाँ आने पर उनमें छेद कर अंदर से दानों को खा जाती है। अधिक प्रकोप की स्थिति में प्रोफेनोफॉस 50 ई.सी. दवा की 1.5 लीटर मात्रा प्रति हेक्टेयर को 600 से 800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- पशुओं को रात में खुले स्थान पर नहीं रखें। बिछावन के लिए सुखी घास या राख का उपयोग करें। दुधारु पशुओं को लिवरफ्लूक संक्रमण से वचाव हेतु धान का पुआल नहीं खिलावें। अगर पशुओं मे दस्त, निचले जबड़े में सुजन जैसी लक्षण दिखाई दे तो ट्राकाबेन्डाजोल दवा खिलाएँ।

आज का अधिकतम तापमानः 15.5 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 7.1 डिग्री सेल्सियस कम	आज का न्यूनतम तापमानः 11.0 डग्री सेल्सियस, सामान्य से 0.7 डिग्री सेल्सियस अधिक

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी